शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 18 | उदयपुर रविवार 15 अक्टूबर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लक्ष्मी के प्रतीकार्थ पगल्यों का मंडन

-डॉ. कहानी भानावत-

सृष्टि में जो कुछ दिखाई दे रहा है, उसके केन्द्र में मनुष्य है। इस पूरी सृष्टि में मनुष्य की जीवनधर्मिता से जुड़े जितने भी संख्य-असंख्य पक्ष हैं, अपने अनुभवों से उसने प्रतीकों के माध्यम से जोड़ने तथा समझने की चेष्टा की है। कोई चीज ऐसी नहीं बची है, मूर्त-अमूर्त, जड़-चेतन, जिसे मनुष्य ने किसी प्रतीक, मिथक, आस्था, विश्वास, धारणा, अवधारणा तथा शुभ, अशुभ से नहीं जोड़ी हो। अत: शास्त्र और लोक दोनों में इन प्रतीकों की सत्ता महत्ता तथा अस्मिता स्वीकार की गई है।

भारतीय संस्कृति में मुख्यत: पांच प्रतीक सर्वाधिक रूप में स्वीकारे गये हैं। इनमें दीप ज्ञान-प्रकाश का, कमल सृष्टि के उद्‌भव-विकास का, वटवृक्ष विस्तार-विशाल का, स्वस्तिक कल्याण-मंगल का एवं ओम् ध्वनि-नादोद्गम का प्रतीक कहा गया है।

त्यौहारों में दीवाली का त्यौहार कई दृष्टियों से सर्वतोभावेन महत्वपूर्ण बना हुआ है। यह शुभ-मंगल, ज्ञानाराधना समृद्धि तथा पुरुषोत्तम प्राप्ति का प्रतीक माना गया है। इसकी मुख्य देवी लक्ष्मी कही गई है जिससे जुड़ी कई कथाएं, कई मिथक तथा कई धारणाएं सृष्टि और मनुष्य के मंगल-मांगल्य का स्वस्थ पर्यावरणीय सुखद संदेश देती हैं।

लक्ष्मी के प्रतीक रूप में घरों में सर्वाधिक रूप में दीवाल-आंगन को पगल्यों के रूप में मांडनी-महक दी जाती है। सर्वाधिक मांडनों की झिलमिलाहट दीवाली पर ही देखने को मिलती है। घर के प्रवेश द्वार, ढालिये, परसाल, पशु बांधने के स्थान, आंगन, चौक से लेकर तिजोरी स्थान तक लक्ष्मीजी के प्रतीक रूप में भांत-भांत के पगल्ये मांडे जाते हैं। पगल्यों के साथ उनके कलात्मक सौंदर्यवर्धन को दर्शाते फूल-पत्ती, चीड़ा-चीड़ी, चौक-सातिये, जलेबी-

मुरकी, हीड़-दीये, मांडे जाकर उन्हें चीरणों, जुओं, बेलों, भंवरों, फुलझड़ियों, लटकनों तथा चरती-भरती, आकड़-बांकड़ बुनावटों से बुन दिया जाता है।

डेरी-पेड़ी के मांडनों में कहीं-कहीं बंद मुट्ठी को राती में डूबोकर लक्ष्मीजी के पैर-पगल्ये तो कहीं पांचों अंगुलियों के पोरों पर गेरु लगा छाप उठाई जाती है। दीवाली के इन मांडनों से पूरा घर-आंगन ही नहीं, सब गलियां और पूरा गांव-शहर ही मुलकायमान हो उठता है। ऐसे में लक्ष्मीजी का प्रत्येक घर-आंगन में मुलक-मुलक प्रवेश सबको शुभ-सुख की मंगल-समृद्धि के रंग-राग में बांध देता है।

डॉ. शरद पगारे को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर में 10 तथा 11 अक्टूबर को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में इन्दौर के प्रख्यात ऐतिहासिक कथा-लेखक डॉ. शरद पगारे अपने श्रेष्ठ सृजन के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजे गए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि साहित्यकार सृजन के माध्यम से सारस्वत साधना करता है। उसकी कृतियां इतिहासजयी होती हैं। बदलते परिवेश और समय में संतानें बेईमान हो गई हैं मगर कृतियां कभी बेईमान नहीं होतीं। एक युग आयेगा जब सर्जक के वंश का अन्त हो जायेगा परन्तु कृतियां उसके वंश की आभा को समाज, देश और प्रबुद्धों की आत्मा के साथ आलोकित करती रहेंगी। कृति का महत्व प्रतिपादित करते हुए डॉ. पगारे ने कहा कि कृति में इतनी बड़ी ताकत होती है कि वह समय को जीत लेती है। जीवित कलाकार विस्मृति के गर्भ में उसके अंधेरे में छिप जाता है और उसके जीवित रहने पर भी लोग भूल जाते हैं लेकिन स्वर्गवासी सारस्वत साधक अपनी कृतियों के माध्यम से हर समय जीवित और चमक बनाये रहता है।

डॉ.भानावत के निवास पर डॉ. पगारे ने भेंटकर साहित्य और जीवन परिवेश के हालातों पर गंभीर चर्चा की।

गोइन्का पुरस्कार-सम्मान समारोह

जयपुर में 8 अक्टूबर को आयोजित गोइन्का पुरस्कार-सम्मान समारोह में प्रो. जहूरखां मेहर को गोइन्का राजस्थानी साहित्य सारस्वत सम्मान, डॉ. चेतन स्वामी को मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार, श्रीमती ज़ेबा रशीद को रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार, श्रीमती शीतल दूगड़ को राजस्थान अनमोल रत्न सम्मान तथा राजस्थली के संपादक श्याम महर्षि को रावत सारस्वत पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया गया। संयोजक अरुण अग्रवाल के अनुसार मुख्य अतिथि मंत्री अरुण चतुर्वेदी तथा अध्यक्ष माणक के सम्पादक पदम मेहता ने गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा राजस्थानी भाषा साहित्य के क्षेत्र में किये जा रहे उल्लेखनीय योगदान को आदर्श एवं अनुकरणीय बताया। फाउण्डेशन के आयोजक श्यामसुन्दर गोइन्का ने आगन्तुकों का सम्मान किया।

डॉ. रणजीत की 80वीं बरसगांठ

बैंगलोर। प्रगतिशील रचनाकार डॉ. रणजीत की 80वीं वर्षगांठ धूमधड़ाके से मनाई गई। अध्यक्षता कवि ज्ञानचंद 'मर्मज्ञ' ने की। समारोह का प्रारंभ सुरेन्द्र कोहली ने मधुशाला की प्रभावक रुबाइयों से किया। डॉ. रणजीत की साहित्य साधना तथा जीवनधर्मिता पर प्रेम तन्मय, गिरीश माहेश्वरी, मिथिलेश गुप्ता, रेखा माहेश्वरी, डॉ. लाल, पवित्रा शर्मा, कामिनी, रमेश समनानी, अनुष्का आनंद, अनन्या एंजिल ने संस्मरणों तथा गीतिकाओं के माध्यम से साहित्यिक अवदानों को रेखांकित किया।

अध्यक्ष ज्ञानचंद 'मर्मज्ञ' ने शॉल मंजूषा भेंट करते डॉ. रणजीत को प्रतिरोधी कवि, सामाजिक सरोकारों से जुड़े प्रखर लेखक तथा समय की शिला पर अमिट हस्ताक्षर अंकित करने वाला ओज-धनी व्यक्तित्व बताया। पत्नी सुधा रणजीत ने प्रेमपरक संस्मरण सुनाये। स्वागत डॉ. रणजीत- पुत्र अनुराग ने तथा संयोजन बेटी एंजिला रणजीत ने किया।

नारायण सेवा संस्थान द्वारा 'समर्पण कार्यक्रम' आयोजित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान द्वारा दीपावली के उपलक्ष्य में 'समर्पण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इसमें कार्यकर्ताओं ने जरुरतमंदों की सेवा के लिए संस्थान द्वारा चलाए जा रहे निशुल्क सेवा प्रकल्पों को पूर्ण समर्पण के साथ करने की शपथ ली। संस्थापक 'कैलाश मानव' सहसंस्थापिका कमलादेवी व अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कार्यकर्ताओं को उपहार प्रदान करते हुए ज्योतिपर्व की शुभकामनाएं दी।

स्मृतियों के शिखर (38) : डॉ. महेन्द्र भानावत

गीतकार नईम

गीतकार नईम से पहली बार मिलना हुआ या पत्राचार हुआ, यह तो ठीक से याद नहीं पर सन् 1965 से लेकर 70 के बीच उनसे घनिष्ट रूप में पत्राचार शुरू हो गया था तब पूरे देश में एक नवगीतकार के रूप में उनकी पहचान बन गई थी और कवि सम्मेलनों में नईम, सोम ठाकुर और कुंवर बैचेन की तूती बोला करती थी।

लेखन से शुरू हुआ हमारा परिचय कभी न कम पड़ा न टूटा अपितु गाढ़ातर ही बनता गया। कई पत्र-पत्रिकाओं में नईम और मैं, साथ-साथ छपे। खासकर धर्मयुग में। वे गीत लिखते और मैं लोकजीवन की धड़कनों में बसती-पसरी लोकसंस्कृति को संस्कारित करता।

नईम बड़े प्यारे गीतकार थे। जितने अच्छे वे गीत लिखते, उतने ही अच्छे रूप में वे अपने गीतों को प्रस्तुति देते। कवि सम्मेलनों और कवि गाष्ठियों में पढ़े जानेवाले गीतों के अन्तर को वे बखूबी समझते थे और कहते भी कि गीत की असली आत्मा को जीवंतता तो गोष्ठियों में ही मिलती है। गोष्ठियों के श्रोता भी गीत को पारखी दृष्टि से समझनेवाले होते हैं। मंचों पर गीत अपने अन्तर मन से नहीं खिल पाता। वह बाहरी मन के बनाव एवं सिणगार में खुला रहकर श्रोताओं को रसमग्न करता है पर रचनाकार को बार-बार बहलाव की मुद्रा में रहना पड़ता है।

नईम गीतकार नहीं होते तो एक समर्थ व्यंग्यकार होते। यह उनके द्वारा लिखे गये पत्रों से स्पष्ट होता है। वे मित्रों पर ही नहीं, उपने ऊपर व्यंग्य करने में भी कोताई नहीं करते। मित्रों के बीच बैठना, बतियाना, हंसी-ठट्ठा करना, ठलुआई करना उन्हें अच्छा लगता और वे ऐसे मित्रों की तलाश में भी रहते। एकबार परिचय होने पर वे अपनी मैत्री को मधुर और स्थायी बनाये रखने की चेष्टा करते।

नवम्बर 1985 में राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश आतुर के नेतृत्व में अन्तरप्रांतीय साहित्यकार बंधुत्व योजना के तहत हम लोग भोपाल गये। लौटते समय सोचा, देवास में घंटे भर के लिए नईम से 'हलो हाऊ' की जाय। पूरी मेटाडोर ठहाकों से गूंजती हुई उनके घर पहुंची। उन्होंने पूरी आत्मीयता से हमारा स्वागत किया। हमने उनसे जी भर गीत सुने। डॉ. आतुर और नंद चतुर्वेदी के कारण हमारी वह पूरी यात्रा ही ठहाकों से ठट्ठ रही।

यहां आकर मैंने उनको पत्र लिखा। उत्तर में 22 फरवरी 1986 के पत्र में उन्होंने लिखा- ''घंटे आधा घंटे रूकने पर आपने पड़ाव कहा। सच तो ये है कि पड़ते तो पड़ाव होता भाई। आप लोग सिर्फ बैठे सो बैठाव कहें।'' इसी पत्र में उन्होंने लिखा- ''बड़ा जी करता है कि दो-चार दिन उन्मुक्त ठहाके ठलुआई हो तो मजा आ जाये।

ठहरी हुई जल झीलों में लहरें उठें। नंद बाबू हैं तो जब तब उठती ही रहती होंगी। यहां तो इस साल तालाब पोखर तक सूखे पड़े हैं।'' इस लम्बे पत्र में वे अपने ऊपर फब्ती कसने में भी नहीं चूके- ''घर से निकलने के लिए बहाना चाहिये। यहां गृहमंत्रालय की गिरफ्त जरा तगड़ी है। खुदा एक अदद बीबी बेगम तो सबको दे लेकिन प्रधानाध्यापिका बेगम किसी को न दे। मेरा इशारा आप समझ रहे होंगे और समझदार को इशारा काफी होता है।''

उनके घर पर हमारा अल्पकालीन ठहराव न हमें तृप्ति दे पाया, न वे ही तृप्त हो पाये। इस बात को उन्होंने बड़ी चतुराई से लिखा- ''आप जैसे द्विज औघड़ संत पीर फकीर मिलते भी कहां हैं। मैं तो मातमी सूरत लिए बैठा था। आप लोगों के चेहरे देखकर नूर आ गया। नाश्ते के बाद चंद शेर सुनकर आप हिसाब-किताब साफ कर गए। मैं ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि न तो मैं मारवाड़ियों जैसा मूंजी हूं और न मेवाड़ियों सा बहादुर।''

मेवाड़ियों को बहादुर तो उन्होंने कह दिया लेकिन उस बहादुरी पर उनका पैना व्यंग्य-रंग देखिए। वे लिखते हैं। ''मनमामीती के लिए रास्ता निकालना कोई मेवाड़ियों से सीखे। प्रताप के वंशज घास पर सोने के लिए प्रतिश्रुत थे सो चांदी के पलंग के नीचे घास डालदी। प्रतिज्ञा भी निबाहली और पलंग के आनंद भी ले लिये। न हो तो राजमहल में जाकर देखलें।''

देवास का हमारा वह थोड़े समय का प्रवास इतना गहन यादगार लिए बन गया कि नईम वर्षों तक उसकी याद जिलाए रहे। जिलाए ही नहीं रहे अपितु दुख और अवसाद के क्षणों में उसकी याद उन्हें जीवंतता तथा जीपटता भी देती रही।

अपने 27 दिसम्बर 1992 के पत्र में उन्होंने लिखा- ''देवास जब आप आये थे तब मैं घर में बैठा सासू साहेबा की मौत का मातम कर रहा था। बच्चे घर में नहीं थे। आज भी बच्चे घर में नहीं हैं। तब सास को सुपुर्दे खाख करके आया था। आज 46 वर्षीय साले के प्रयाण के बाद अकेला आप से मुखातिब हूं। तब चतुर्वेदीजी (नंद चतुर्वेदी) थे कि ठहाके लगाकर गम गला कर रहा था। जीने की हिम्मत बटोर रहा था। हमारे बाद जिसे जाना चाहिये था वह बिना बताये चला गया। खैर, हमें तो बामकसद अभी जीना है। विनाश के विरूद्ध रचना बचाव का समर्थ हथियार है।''

उदयपुर को नईम अपना ही घर और मित्रों को परिवार मानकर खुश रहते थे। कभी जब अपने को बोझिल समझते तो चिट्ठी लिखने बैठ जाते। एकबार उन्होंने लिखा- ''लिखते-लिखते जी में आ रहा है कि उठूं और उदयपुर पहुंच जाऊं और तमाम अजीजों से मेल मुलाकात दरस-परस कर लूं।''

(24 अगस्त 1998 के लिखे अन्तर्देशीय से)

नंद बाबू का जिक्र वे अपने हर पत्र में करते रहे। इस पत्र में तो उन्होंने मुझे उलाहना ही दे दिया कि हम लोग नंद बाबू की 75वीं जयंती नहीं मना पाये। उन्होंने लिखा- ''नंद बाबू 75 के हो गये और उदयपुर में कोई हलचल ही नहीं हुई। शायद उदयपुर में 75 का हो जाना कोई अर्थ नहीं रखता हो। वहां शतायु होने पर ही पूछ-परख होती हो। अपने अग्रजों के प्रति प्रणाम निवेदन करने की कोई स्वस्थ परम्परा तो डालनी होगी।'' (वही पत्र)

नईम गृहस्थ जीवन में जूझते हुए भी हमें कभी नहीं भूले। पत्रों का सिलसिला वैसा नहीं रहने पर भी वे हमें विस्मृत नहीं कर पाये। उनका आखिरी पोस्टकार्ड 23 मार्च 2007 का लिखा मेरे पास सुरक्षित है। आलस्य की वजह ही रही होगी, मैं इस पत्र का उन्हें यथासमय उत्तर नहीं दे पाया और ठीक एक माह बाद उन्हें पोस्टकार्ड लिखा। उनका पत्र था-

आदरणीय भानावत सा. राधागंज, देवास

आदाब अर्ज 4 मार्च 2007

आशा है, सकुशल होंगे। दिनों बाद याद कर रहा हूं। आशा है, आप स्वस्थ और सक्रिय होंगे। मेरा उदयपुर आना संभव नहीं हो पा रहा है सो खत के माध्यम से पहुंच रहा हूं। मेरी प्रेमपाती मिल जाये तो रसीद अवश्य भेजिएगा।

आपका
नईम

और दो वर्ष बाद 9 अप्रैल 2009 को नईम सदा के लिए हमसे बिछुड़ गये। खत के माध्यम से भी अब वे अपनी प्रेमपाती नहीं भेज पायेंगे और न हमारी सुध ले खकेंगे। सचमुच में वे यारों के यार, दिलदार तथा दिल्लगी से परिपूर्ण मित्र थे।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 अक्टूबर 2017

सम्पादकीय

माटी का दीया और मनुष्य

माटी के पुतले मनुष्य को माटी का दीया क्या दे सकता है? छोटा सा दीपक और छोटा सा मनुष्य कहीं खोटा नहीं है। दीपक में ज्योति है तो मनुष्य में भी। दीपक में किरण है तो मनुष्य में भी। दीपक में स्नेह है, ममत्व है, समत्व है, अपनत्व है। मनुष्य में भी यह सब कुछ है। अकेला दीया कितना बड़ा हिया रखता है। उसे कहीं छोड़ दो। तलवे में चाहे मलवे में, राजमार्ग पर चाहे जरा मार्ग पर। वह प्रकाश की करौती से अंधकार को चीरता नजर आयेगा। उसके पास देने को कुछ नहीं है। वह तो जल रहा है और जल-जल कर अंधकार को केशरिया कुंकुमी परिधान दे रहा है।

यह छोटा सा दीपक अकेला है मगर जब चाहता है जोत से जोत लड़ी कर आकाश-पाताल तक रोशन-राह खड़ी कर देता है। श्राद्धपक्ष में आये पितरों को यही तो रास्ता बताकर उन्हें यथास्थान पहुंचाता है। दीपक का अस्तित्व उसकी जोत है। यही जोत मनुष्य का अस्तित्व भी है मगर मनुष्य का स्नेह जब सूख जाता है तब उसकी लौ बुझ जाती है और वह बुझ दिल हो जाता है।

मोती का पानी उसकी कान्ति है। दीप का पानी उसकी स्नेह-जोत और मनुष्य का पानी उसकी मर्दानी जवानी है। इन्हें किसी का आवरण नहीं चाहिये। आवरण तो अंधेरा है। अंधेरा घेरा है। जो स्वयं बंदी बन जाता है। ज्योति कभी बंधती नहीं, विकीर्ण होती है। फैलती है। जो फैलती है वह फलती है। दीया स्वयं नहीं फैलकर अपनी जोत को फैलाता है मगर मनुष्य अपनी जोत को कैदकर स्वयं फैल जाता है और यहीं आकर उसकी मौत हो जाती है।

जो मनुष्य ज्योति को मांडता है वह परम ज्योति को प्राप्त हो जाता है। ज्योति को मांडने वाला मनुष्य अपने आंगन तक को मांडता है। कितने विविध मांडने। कितने चौक, सातिये, पगलिये, दीये, हीड़ और तरह-तरह के पकवानों का आकार प्रकार लिये मांडनें। कोई कोना, आंगन, देहरी और द्वार कुंवारा न रह जाय। सब तरफ तरह-तरह के मांडनें जैसे हीरे, पन्ने, माणक और मोती लाल बिखरे-जड़े हों। कितना बेशकीमती आंगन!

कहीं रिक्तता नहीं। विविध रंगों से सजा संवरा आंगन रूप, साज और सिणगार देता है हमारे जीवन को। यह अकेला आंगन पूरी एक सृष्टि है। चांद, सूरज, गृह, नक्षत्र सबके सब इस आंगन में आ समाये हैं। मांडनों को पूरने वाले भरण, चीरण, बेल, भंवर, आंकड़-बांकड़ तथा तोड़-मरोड़ सृष्टि के दार्शनिक बिन्दु-सिन्धु हैं। मनुष्य इस आंगन का अंगजीवी है। शक्ति रूपा नारी इसका मूल है जो अपने करों से अपने पगल्यों को पायल देती हुई शाश्वत रंग आनंद की सृष्टि करती है।

दीपक घर में है। दीपक बाहर है। दीपक देहरी पर है। कोटे-परकोटे पर है। दीपक परेंडे पर है। आलियों में है। स्नानगृह और शैय्यागृह में है। दीपक राह पर है। चौराहे पर है। दीपक छज्जे पर है। बाजे पर है। तलाश लक्ष्मी की है। प्रकाश सरस्वती का है। घर लिछमियां थाली में पूज रही हैं इस प्रकाश पुत्री को। थाली के दीपक थापे यह लिछमी कितनी दिव्य लग रही है।

दीवाली असंख्य दीपों की

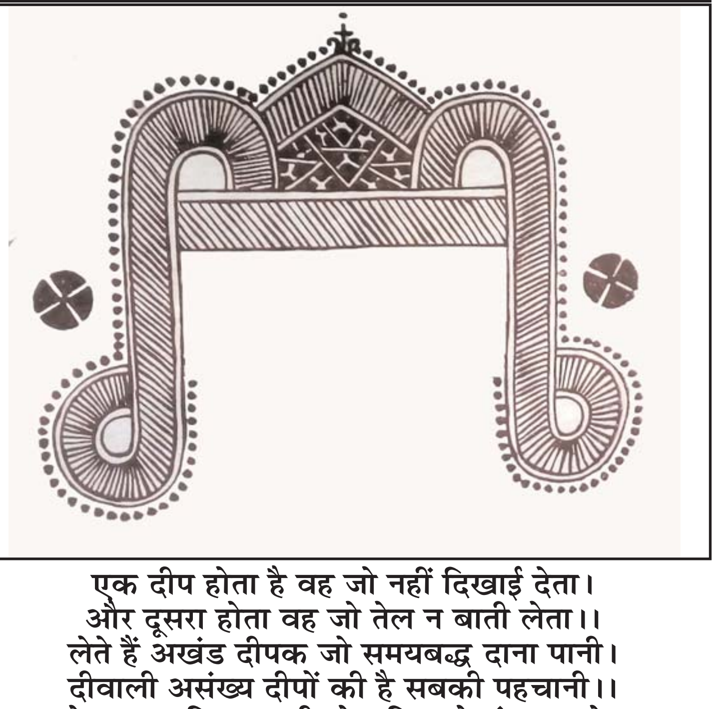

एक दीप होता है वह जो नहीं दिखाई देता।
और दूसरा होता वह जो तेल न बाती लेता।।
लेते हैं अखंड दीपक जो समयबद्ध दाना पानी।
दीवाली असंख्य दीपों की है सबकी पहचानी।।
देव मनुज मिलकर ही तो सृष्टि को सुंदर करते।
घना अंधेरा हरते जगमग ज्योति कलश से भरते।।

जीवन-यात्रा और पर्यटन के कदम

-डॉ. भगवतीलाल व्यास-

विद्वानों और दार्शनिकों ने पूरे जीवन को ही एक यात्रा माना है। जिस पल पैर और रास्ते का संपर्क होता है उसी पल से ही पर्यटन शुरू हो जाता है। पुराने समय में यात्रा को धर्म और अध्यात्म से जोड़ा गया था इसलिए यात्रा का क्रम पूरी सांसारिक जिम्मेदारियां निपटने के पश्चात् आता था। उन दिनों न तो यातायात के विकसित साधन थे और न ही आम आदमी के पास इतना पैसा था कि वह साधनों का उपयोग कर सके। यात्रा एक तरह से जिन्दगी का आखिरी पड़ाव माना जाता था और लोग अपने कुटुम्बियों, पड़ोसियों और हेत-प्रेम वालों से आखिरी रामा-श्यामा करके यात्रा के लिए निकलते थे।

आज इन्सान के पास इतने साधन हैं कि वह सुबह का नाश्ता एक देश में, दुपहर का भोजन दूसरे देश में और रात का खाना तीसरे देश में कर सकता है। चाहिए संकल्प और साधन। पूरा विश्व आज इन्सान के कदमों तले है। श्री माणक तुलसीराम गौड़ एक सजग, जीवन्त और दृष्टि संपन्न पर्यटक हैं जो दर्शनीय स्थानों को कई कोणों से देखते-परखते हैं।

आज वे सब बातें नहीं रहीं। आज इन्सान के पास इतने साधन हैं कि वह सुबह का नाश्ता एक देश में, दुपहर का भोजन दूसरे देश में और रात का खाना तीसरे देश में कर सकता है। चाहिए संकल्प और साधन। कहावत है कि साधनों में सबसे बड़ा साधन है धन। पैसा पानी में भी रास्ता निकाल लेता है। जल, थल और अम्बर- कोई जगह ऐसी नहीं है जहां आदमी ने रास्ता नहीं खोजा हो। पूरा विश्व आज इन्सान के कदमों तले है।

इन्सान एक जगह से दूसरी जगह चार पदार्थों की प्राप्ति हेतु ही यात्रा करता है। पुराने समय में धर्म जीवन के केन्द्र में था इसलिए यात्रा को धर्म से जुड़ना और जोड़ना जरूरी था। उन दिनों सांसारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होने के पश्चात् ही इन्सान यात्रा पर जाने की सोचता था, लेकिन दृष्टि और सृष्टि में बहुत बदलाव आ गया है। यात्रा का हेतु और दायरा भी बहुत बढ़ गया है। बहुत से लोगों की जीवन-शैली में तो यात्रा इस कदर घुल-मिल गई है कि उनको यह रोजमर्रा का एक काम लगता है। यात्रा का भी एक उद्देश्य नहीं रह गया है। पर्यटन के भी कई प्रकार और प्रयोजन विकसित हो गए हैं। पर्यटन की बढ़ती पूछ-परख का अन्दाज इस बात से भी लगाया जा सकता है कि सरकार को भी पर्यटन के लिए स्वतंत्र विभाग खोलना जरूरी लगा। पर्यटन के उद्देश्यों के अनुसार पर्यटन की कई शाखाएँ विकसित हुई हैं- ऐतिहासिक पर्यटन, पुरातात्विक पर्यटन, भौगोलिक पर्यटन, शैक्षिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, वैज्ञानिक पर्यटन, औद्योगिक पर्यटन आदि-आदि।

श्री माणक तुलसीराम गौड़ ऐसे तो बैंक में अधिकारी रहे, लेकिन यह पुस्तक पढ़ने पर यह कहा जा सकता है कि उनके हृदय में एक सजग, जीवन्त और दृष्टि संपन्न पर्यटक विराजमान है जो दर्शनीय स्थानों को कई कोणों से देखता-परखता है और उनका मनमोहक हृदय में रमता, चित को आकर्षित करता हुआ वर्णन करता है कि कोई भी पर्यटन प्रसंग पढ़ना शुरू करने के पश्चात् उसे पूरा करना ही पड़ता है।

इस पुस्तक के यात्रा-प्रसंगों में धर्म, अध्यात्म, लोकदेवता, तीर्थस्थान, महानगरीय जीवन, लोकजीवन आदि पक्षों को लेखक इतनी तल्लीनता से उकेरता है कि पढ़ते समय पाठक को यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि वह कोई पुस्तक पढ़ रहा है या कोई फिल्म देख रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि लेखक ने कहीं भी अपनी विद्वता और बड़बोलेपन का बघार नहीं लगाया है।

लेखक की यह विशेषता पाठक को यात्रा और दूसरे प्रसंगों में इस तरह सम्मोहित करती है कि पाठक खुद को उस प्रसंग के एक पात्र के रूप में अनुभव करने लगता है। मैं समझता हूँ कि लेखक को इसके लिए कितना तप करना पड़ा होगा। तप की यह जोत पर्यटन के प्रति पाठकों के हृदय में उल्लास और उजाला बढ़ाती रहेगी। मेरी राय में जो पाठक यात्रा संस्मरण में विशेष रुचि रखते हैं या प्रिय संस्मरण में रुचि रखते हैं या केवल सत्साहित्य पढ़ते हैं उन्हें यह 'धर कूचां धर मजलां' नामक यात्रा संस्मरण पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए।

इस पुस्तक में राजस्थानी में लिखे गये 18 लेख हैं। इनमें लेखक की नेपाल, बांसवाड़ा, नासिक, मेवाड़, चैन्नई, हैदराबाद, मसूरी, रामदेवरा, हरिद्वार, रायगढ़ की यात्रा के बड़े ही सरस, सुखद तथा संश्लिष्ट संस्मरण हैं। प्रारंभ में डॉ. महेन्द्र भानावत की भूमिका है। कुल 120 पृष्ठीय यह पुस्तक एक सौ रूपया मूल्य की है।

निःशुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ

उदयपुर। धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ लोगों को स्वरोजगारोन्मुखी बनाने के लिए पूरे देश में पहल कर रहे श्री सत्य साईं सेवा संगठन द्वारा पहले व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना करौली में की गई है। श्री सत्य साईं सेवा संगठन के प्रवक्ता ने बताया कि भगवान श्री सत्य साईं बाबा के दिव्य अनुग्रह और आशीर्वचन के साथ पहला ग्रामीण व्यवसायिक प्रशिक्षण केंद्र प्रारंभ कर दिया गया है। इसी प्रकार के पूरे देश में प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए जाएंगे, ताकि युवाओं को रोजगारोन्मुखी बनाया जाए।

कार्यक्रम का शुभारंभ ग्रामीण व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र के राष्ट्रीय समन्वयक के.एम. राव किया। वेद पाठ से प्रारंभ इस कार्यक्रम में भजनों की भी प्रस्तुति दी गई। संस्थान के प्रधान नरेन्द्र शर्मा ने के.एम. राव का स्वागत किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया जो कार्यक्रम की विशिष्टता का परिचायक है। श्री सत्य साईं के प्रवक्ता के अनुसार इस प्रशिक्षण में इलेक्ट्रिकल क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण 10 छात्रों को निःशुल्क दिया जाएगा जिसकी अवधि तीन माह की है।

सोजतिया ज्वेलर्स की अनूठी पहल

उदयपुर। दीपोत्सव पर्व से ठीक पहले कपड़े, मिठाइयां, कंबल और जरूरत की चीजें पाकर 120 निराश्रित और दिव्यांग बच्चों के चेहरों पर मुस्कराहट और उनके घरों में खुशियां छा गई। 'सबके घर रोशन हो खुशियों का दीया' की अनूठी सोच लेकर सोजतिया ज्वेलर्स ने शहर के विभिन्न दिव्यांग आश्रमों, कच्ची बस्तियों में जाकर वंचित बच्चों के साथ खुशियों का पर्व मनाया और बच्चों की माताओं को साड़ियां वितरित की। समाजसेवी रणजीतसिंह सोजतिया ने बताया कि दीपावली एक-दूसरे के बीच उल्लास बांटने का पर्व है। ऐसे में कोई बच्चा दीवाली की चमक-दमक से दूर नहीं रहे, इसी सोच के साथ उन्हें कंबल, मिठाइयां, कपड़े बांटे गये। डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि इस दौरान बच्चों और उनके परिजनों की खुशियां देखने लायक थीं। अचानक मिले उपहारों से वे अभिभूत हो गए। रीना सोजतिया ने बताया कि सोजतिया ज्वेलर्स की ओर से हर वर्ष दीवाली से पहले इस तरह का आयोजन किया जाता है। इसके पीछे एकमात्र सोच निराश्रित और वंचितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना और उनके आत्मविश्वास जगाना है।

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

सोमवार से शनिवार तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,

नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पिटल के पास वाली गली),

उदयपुर - 313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय

प्रतापनगर, उदयपुर-313001 (राजस्थान) फोन : 0294-2492441, फैक्स 0294-2492440

Web. : www.jrnrvu.edu.in

दीपावली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

प्रो. सी.पी. अग्रवाल	भंवरलाल गुर्जर	प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत	श्री एच.सी. पारख	डॉ. देवेन्द्र जौहर
रजिस्ट्रार	कुल प्रमुख	वाइस चांसलर	चांसलर	कुल अध्यक्ष

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय एवं कुल परिवार

दीपावली व नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

आकाश वागरेचा

EVEREST GROUP OF COMPANIES SINCE 1963

एवरेस्ट ग्रुप ऑफ कम्पनीज़

- शुभलक्ष्मी बिल्डकॉन प्रा. लि.
- सावा सर्जिकल प्रा. लि.
- एवरेस्ट नेचुरल हर्बल प्रा. लि.
- एवरेस्ट इंटरनेशनल होटल एंड रेस्टोरेंट
- एवरेस्ट आशियाना बिजनेस प्रा. लि.

169- ओ रोड़, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

हिन्दुस्तान ज़िंक को प्लेटीनम अवार्ड

उदयपुर। पांच अक्टूबर को जयपुर में हिन्दुस्तान जिंक को सीआईआई-आईजीबीसी प्लेटीनम अवार्ड से सम्मानित किया गया। जिंक के हेड-

कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि जिंक का प्रधान कार्यालय पूर्ण रूप से सोलर ऊर्जा से संचालित है तथा कंपनी के सभी परिसर एवं सयंत्रों में हरे-भरे पौधों की ग्रीन बेल्ट है। उद्योग मंत्री राजपालसिंह शेखावत ने जिंक की ग्रीन बिल्डिंग परियोजना की सराहना की तथा प्रधान कार्यालय यशद भवन को पूरे देश की इमारतों के लिए उत्कृष्ट उदाहरण बताया। इस अवसर पर वन एवं पर्यावरण मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर, ताई ली सियांग, सुश्री टेरी विल्स और डॉ. प्रेम सी. जैन उपस्थित थे।

पार्श्वकल्ला PARSHVAKALLA

- PARSHVAKALLA PUBLIC RELATIONS
- PARSHVAKALLA PAPERS
- PARSHVAKALLA ADVERTISERS
- मुक्तक प्रकाशन
- सम्पति संस्थान
- शब्द रंजन (विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक)

प्रतिष्ठान : 'पार्श्वकल्ला' 13 14, म्यूनिसिपल शॉप, चेतना होटल के पास, चेटक सर्कल, उदयपुर 313004 (राज.) फोन : + 91 294 2429291, मो. 94141-65391

निवास : 352, श्रीकृष्णापुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर 313001, फोन : +91 294 2412174, मो. 8003377333, E-mail : drtuktakbhanawat@gmail.com

अलख नयन मंदिर सरकारी कर्मचारी व पेंशनर के उपचार लिए अधिकृत

उदयपुर। उदयपुर के अलख नयन आई हॉस्पिटल को राज्य कर्मचारियों, निकाय कर्मचारियों, विश्वविद्यालय के कर्मचारियों सहित, पेशनरों आदि के उपचार के लिए एक बार फिर से पांच साल के लिए अधिकृत किया है।

अलख नयन आई हॉस्पिटल की मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला ने बताया कि राजस्थान सिविल सर्विसेज (मेडिकल अटेंडेंस) रूल्स 2013 के तहत हैल्थ बेनिफिट एम्पावर्ड कमेटी (एचबीईसी) की अनुशंसा पर राज्य सरकार की वित्त सचिव (बजट) मंजू राजपाल ने यह आदेश जारी किया।

आदेश में कुल छह अस्पतालों की सूची जारी की गई है जिसमें से उदयपुर के अलख नयन मंदिर आई हॉस्पिटल को नेत्र संबंधी सभी बीमारियों के उपचार के लिए अधिकृत किया है।

मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला ने बताया कि अलख नयन मंदिर हॉस्पिटल पर कर्मचारियों को यह सुविधा पहले ही दी जा रही थी, अब सरकार ने इसका रिन्यूअल करते हुए अगले पांच वर्ष के लिए विस्तार कर दिया है। उदयपुर में सुखाड़िया विश्वविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सरस डेयरी, एयरपोर्ट ऑथरिटी, सेवानिवृत्त सेना कर्मचारी सहित अन्य कर्मचारियों को उपचार का लाभ यथावत मिल सकेगा।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

ARCHI PEACE PARK
feel the peace

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

वित्तीय वर्ष में सार्थक परिवर्तन

-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत-

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नीति आयोग की गवर्निंग परिषद् की बैठक (अप्रैल 2017) में सुझाव दिया कि सरकार का वर्तमान वित्तीय वर्ष अप्रैल- मार्च से परिवर्तित कर जनवरी-दिसंबर कर दिया जाना चाहिये। इस वक्तव्य के साथ ही देश में 150 वर्ष पुरानी बहस फिर से बुद्धिजीवियों में जीवित हो गयी। भारत में सबसे पहले 7 अप्रैल 1860 को ब्रिटिश सरकार ने प्रथम बजट प्रस्तुत किया था। तब वित्तीय वर्ष 1 मई से 30 अप्रैल हुआ करता था। उस समय ब्रिटेन में वित्तीय वर्ष अप्रैल - मार्च हुआ करता था।

सात वर्ष तक यह परंपरा चलती रही। भारत सरकार के वित्तीय वर्ष को ब्रिटिश सरकार के साथ समरूपता स्थापित करने के लिए 1867 में भारत सरकार के वित्तीय वर्ष को भी 1 अप्रैल - 31 मार्च कर दिया जो अब तक चला आ रहा है। कई बार इसमें परिवर्तन के प्रयास किये गए किन्तु सरकार सफल नहीं रही।

1865 में भारतीय लेखा जांच आयोग का गठन किया जिसमें फोस्टर (सहायक पे मास्टर जनरल) एवं विफिन (उप लेखाकार जनरल) सदस्य थे। इस आयोग ने सुझाव दिया कि वित्तीय वर्ष 1 जनवरी से प्रारम्भ होना चाहिये किन्तु तत्कालीन राज्य सचिव ने इसे अपनाने से मना कर दिया।

इसी तरह 1913 में भारतीय वित्त एवं मुद्रा पर रॉयल आयोग, जो चैंबरलेन आयोग के नाम से जाना जाता है ने भी सुझाव दिया कि वर्तमान वित्तीय वर्ष बजट बनाने के अनुकूल नहीं है अत: इसे 1 अप्रैल से 1 नवंबर या 1 जनवरी पर परिवर्तित कर देना चाहिये। आयोग ने कहा- इससे यद्यपि कुछ समय के लिये प्रशासनिक अड़चनें पैदा होंगी किन्तु बजट की दृष्टि से यह एक बड़ा सुधार होगा। इसी प्रकार 1958 में दूसरी लोकसभा की अनुमान समिति ने 20 वें प्रतिवेदन में वित्तीय वर्ष 1 अक्तूबर से प्रारम्भ करने की अनुशंसा की।

1966 में प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग एवं वित्त लेखा तथा अंकेक्षण पर चौथे प्रतिवेदन में भी 1 अप्रैल से प्रारम्भ होने वाले वित्तीय वर्ष को परिवर्तित कर 1 जनवरी से प्रारम्भ करने की अनुशंसा की। इन सभी आयोगों का मत था कि 1 अप्रैल से वित्तीय वर्ष प्रारम्भ करना हमारे राष्ट्र के रीतिरिवाज एवं आवश्यकता के अनुरूप नहीं है। हमारी अर्थ व्यवस्था कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है तथा मुख्य रूप से यह मानसून के व्यवहार पर निर्भर रहती है। ऐसी स्थिति में यदि वित्तीय वर्ष 1 जनवरी से प्रारम्भ होता है तो बेहतर बजट बनाया जा सकता है क्योंकि जनवरी तक रबी एवं खरीब की फसलों के वास्तविक उत्पादन के आंकड़े हमारे पास होते हैं। परिणामस्वरुप कैलेंडर वर्ष पर आधारित बजट आय का सर्वोत्तम अनुमान वाला होगा।

भारत में सबसे पहले 7 अप्रैल 1860 को ब्रिटिश सरकार ने प्रथम बजट प्रस्तुत किया था। तब वित्तीय वर्ष 1 मई से 30 अप्रैल हुआ करता था। ब्रिटिश सरकार के साथ समरूपता स्थापित करने के लिए 1867 में भारत सरकार के वित्तीय वर्ष को भी 1 अप्रैल - 31 मार्च कर दिया जो अब तक चला आ रहा है। जनवरी से वित्तीय वर्ष प्रारम्भ करना लाभप्रद रहेगा। लगभग 155 देशों में कैलेंडर वर्ष को वित्तीय वर्ष के रूप में अपना रखा है।

1983-84 में केंद्रीय वित्तमंत्री ने फिर यह मुद्दा उठाया और सभी राज्य के मुख्यमंत्रियों से वित्तीय वर्ष परिवर्तन के संबध में अपनी राय प्रकट करने को कहा। सभी मुख्यमंत्रियों ने एक स्वर में परिवर्तन करने की बात कही किन्तु किस महीने से वित्तीय वर्ष प्रारम्भ किया जाये इस पर एक मत नहीं हो पाया। परिणामस्वरूप इस समस्या के निदान के लिए 1984 में एल. के. झा के नेतृत्व में एक कमेटी का गठन किया। इस कमेटी ने वित्तीय वर्ष को 1 जनवरी में प्रारम्भ करने की अनुशंषा की। दिसम्बर 2016 में पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार शंकर आचार्य की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने भी वित्तीय वर्ष को 1 जनवरी से प्रारम्भ करने की अनुशंसा की।

आज हमारा देश कृषि प्रधान नहीं रहा। हम सेवा प्रधान अर्थव्यवस्था की और अग्रसर हो रहे हैं फिर भी 1 जनवरी से वित्तीय वर्ष प्रारम्भ करना लाभप्रद रहेगा। लगभग 155 देशों में कैलेंडर वर्ष को वित्तीय वर्ष के रूप में अपना रखा है। इन देशों की कंपनियां जिन्होंने भारत में विदेशी विनियोग कर रखा है, अपने वार्षिक खाते वर्ष में दो बार बनाने पड़ते हैं क्योंकि भारत में वित्तीय वर्ष अप्रैल - मार्च है। भारत में विदेशी विनियोग मुख्य रूप से मॉरिशस मार्ग (20.8 प्रतिशत, दिसम्बर 2016) से आता है और वहां भी वित्तीय वर्ष कैलेंडर वर्ष ही है। यदि प्रत्यक्ष विदेशी विनियोग को हम बढ़ावा देना चाहते है तो यह उचित कदम होगा। भारत सरकार भी मेक इन इंडिया के तहत विदेशी विनियोग बढ़ाना चाहती हैं और इस कदम से सार्थक परिणाम आने की संभावना है। दिसंबर तक रबी एवं खरीब दोनों फसलों के उत्पादन के आंकड़े भी लगभग उपलब्ध होते हैं। परिणामस्वरुप बजट आय का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। सामान्यतया अकाल भी जून तथा सितम्बर महीनों के मध्य पड़ता है तो जनवरी से बजट होने पर उसका जल्दी बजट आवंटन सम्भव हो सकता है।

मध्यप्रदेश ने तो अपना वित्तीय वर्ष कैलेंडर वर्ष में परिवर्तन करने की घोषणा भी कर डाली। भारत में अभी सार्वजानिक व्यय तथा बजटरी प्रक्रिया में परिवर्तन का दौर चल रहा है। हाल ही में भारत सरकार द्वारा योजना एवं गैर योजना बजट मद के मध्य अंतर समाप्त करना, रेलवे बजट का मुख्य बजट में विलिनीकरण करना, बजट का एक महीने पहले संसद में प्रस्तुत करना, केंद्रीय सहायता प्राप्त योजनाओं में आमूलचूल परिवर्तन करना जुलाई में जीएसटी को लागू करना ठीक समझा है।

इसी दौर में वित्तीय वर्ष परिवर्तित होता है तो ज्यादा प्रशासनिक बाधा नहीं आयेगी यद्यपि सरकार को आयकर अधिनियम में, संसद का सत्र बजट प्रस्तुत करने के समय आदि में परिवर्तन करना होगा और इससे परेशानी जरूर होगी किन्तु यह एक सार्थक कदम होगा।

नये मोड़ पर सूचना प्रौद्योगिकी

-विकल्प मेहता-

आज की दीपावली 4-5 साल पहले की दीपावली से कई मायनो में बदलती तस्वीर पेश करती है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर ने व्यापार करने के तरीकों को काफी जुदा अंदाज में बदल के रख दिया है। आज हम क्या खरीदते है? कैसे खरीदते है? कहां से खरीदते हैं? इनका अंदाज एक अनिश्चित तरीके से बदलते स्वरुप में नजर आ रहा है।

पांच साल पहले इस बात की कल्पना करना बड़ा कठिन था कि घर बैठे-बैठे आप टीवी, सोफे, कुर्सी, कपड़े यहाँ तक कि दूध सब्जी भी खरीद सकते हैं वो भी सिर्फ मोबाइल और क्रेडिट कार्ड से। बाजार व उपभोक्ता दोनों ने ही बड़ी द्रुत गति से इस बदलाव को अपनाया है.

इन सब का सीधा प्रभाव हमारी आसपास की गतिविधियों से विदित हो जाता है। आप कोई सा भी अखबार सुबह उठा लीजिये। उसमें खबर के अलावा सब कुछ मिल जाएगा। मुख्य पृष्ठ से ही आपका सामना कई अलग-अलग विज्ञापनों से हो जाएगा जो आपको कई तरह के उत्पाद आकर्षक छूटों में देने का वादा करते मिलेंगे।

ग्राहकों में ऐसा त्वरित बदलाव पिछले कुछ वर्षो में आई स्मार्टफोन्स की आंधी से हुआ है। भारत आज विश्व में चीन के बाद सबसे बड़ा स्मार्टफोन का बाजार बन चुका है। लगभग 48 प्रतिशत जनता के पास स्मार्टफोन पहुंच चुका है। यह विकास दर 16 प्रतिशत की सालाना रफ़्तार से बढ़ रही है। इस आंधी का अगर ध्यान से विश्लेषण किया जाए तो पाएंगे कि 99 प्रतिशत आयातीत फ़ोन सस्ते व किफायती 4जी थे। रिलायन्स जियो के फ्री डाटा ऑफर ने इस तरह के फ़ोन्स को आम चलन में ला दिया है तथा आबादी के एक बड़े हिस्से को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के बदलते परिमानों का साक्षी बना दिया है। इंटरनेट की पहुँच अब तीसरी श्रेणी के नगर और तहसीलों में आसानी से हो गई है जिसका प्रभाव उपभोक्ता के खरीदने की आदत पर पड़ा है। उदाहरण के तौर पर मेरे घर पर काम करने वाली बाई भी अब जिओ की सिम के साथ स्मार्टफोन रखती है और यू ट्यूब पर खानपान की चीज़ें बनाना सीखती है। यह बहुत ही बड़ा बदलाव है जो भारत में देखने को मिला है। मैं भारत के डिजिटल भविष्य को लेकर काफी उत्साहित हूं।

ग्राहकों में ऐसा त्वरित बदलाव पिछले कुछ वर्षो में आई स्मार्टफोन्स की आंधी से हुआ है। इंटरनेट की पहुँच अब तीसरी श्रेणी के नगर और तहसीलों में आसानी से हो गई है। काम करने वाली बाई भी अब जिओ की सिम के साथ स्मार्टफोन रखती है और यू ट्यूब पर खानपान की चीज़ें बनाना सीखती है। भारत उपभोक्तावाद के एक नए मोड़ पर खड़ा है। बिक्री का रूख ज्वेलरी, घड़ियों, मिठाइयों से मोबाइल फ़ोन्स, टीवी, एलईडी, फ्रिज एवं डिजिटल केमरों की तरफ हो गया है। दीवाली पर अधिकतर विज्ञापन इसी के होने लगे हैं। अँधेरे को हटाने के लिए मात्र दीए न जलायें बल्कि जो अँधेरे में हैं उन्हें उजाले में ले आयें।

मैं पिछले एक वर्ष से उदयपुर व राजसमंद के ग्रामीण इलाकों में स्मार्टफोन की उपलब्धता सुनिश्चित करवा रहा हूँ एवं इस बदलते परिप्रेक्ष्य को मैंने अच्छी तरह से जाना व समझा है। आज मेवाड़ के ग्रामीण इलाके किसी भी तरह के उत्पाद व ऑफर से अछूते नहीं हैं। जो मॉडल उदयपुर सिटी में उपलब्ध हैं वे ही आसानी से इन इलाकों में भी उपलब्ध हैं। सभी कम्पनियां ग्रामीण इलाकों की तरफ रूख कर रही है। जहां पहले एक दुकानदार सिर्फ 2-3 कंपनी के मॉडल रखता था, वह आज 7-8 कंपनी के मॉडल रखने पर मजबूर है। कारण ग्राहक अत्यधिक जागरूक व समझदार है क्योंकि उसके पास एक क्लिक पर सूचना का भण्डार है। देवगढ़, झाड़ोल, फलासिया जैसे कस्बो में आज पेटीएम से पेमेंट आम बात है। यहाँ के ग्राहकों ने अब निकट के बड़े शहरों की तरफ

कूच करना बंद कर दिया है। वो हर वस्तु जो बड़े शहरों में उपलब्ध है उसी दाम में अब वो ग्रामीण इलाकों में उपलब्ध है।

इ-कॉमर्स ने तो इस दिशा में नए आयाम रच दिए हैं। अमेज़न व फ्लिपकार्ट ने ग्रामीण कस्बों के ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए देहाती क्षेत्रों में अपनी दुकानें लगवा दी हैं जो ग्रामीणों से पैसे लेकर उन्हें ऑनलाइन शॉपिंग व अन्य मूलभूत सुविधाएं बेहद कम खर्चे पर उपलब्ध करवा रही हैं। भारत उपभोक्तावाद के एक नए मोड़ पर खड़ा है जिसका अब दीवाली से कोई लेना देना नहीं रहा है। यह लड़ाई उपलब्धता की है जो अब आसानी से जिस समय चाहो उस समय मिल जा रही है। मुझे आज भी याद है कि बचपन में हम दीवाली से कुछ दिन पहले खरीदारी की लिस्ट बना लेते थे। उन पारम्परिक बाजारों में जाकर सभी वस्तुएं खरीद कर लाते थे। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आजकल की नाभिकीय संस्कृति ने संयुक्त संस्कृति के उपभोक्तावाद को ख़त्म करने के कगार पर ला खड़ा किया है। आज के वातावरण में त्यौहार सिर्फ एक लम्बी छुट्टी की संज्ञा मात्र लिए है। आज की दीवाली डिजिटल दीवाली है। हर कोई अपने मोबाइल और लैपटॉप से चीज़ों की खरीदारी कर रहा है। बिक्री का रूख ज्वेलरी, घड़ियों, मिठाइयों से मोबाइल फ़ोन्स, टीवी, एलईडी, फ्रिज एवं डिजिटल केमरों की तरफ हो गया है। दीवाली पर अधिकतर विज्ञापन इसी के होने लगे हैं।

पटाखा उद्योग अब वैसा नहीं रहा जैसा कुछ सालों पहले रहता था। दीपावली से पूर्व नाना-दादा के घर ढेर सारे पटाखे लाकर हर दिन का पैकेट बना रख देते थे परन्तु अब दीवाली के दिन सिर्फ आधा घंटे का पटाखा कार्यक्रम लगता है। पटाखों में आज का ग्राहक ज्यादा निवेश नहीं करना चाहता क्यूंकि यह पर्यावरण के लिहाज से गलत और निवेश के हिसाब से लाभदायक नहीं है।

इतने परिवर्तनों के बाद भी हर भारतीय के मन में कुछ ऐसी प्रवत्तियां होती हैं जो हर दीवाली पर कुछ नए ब्रांडेड कपड़े लेना, मोमबत्ती या दीए जलाना, मिठाइयां लेना, घर को पेंट करवाना जरूरी समझते हैं। वर्षों पुराने पारम्परिक बाजार जैसे करोल बाग़ दिल्ली, टी नगर चेन्नई या लिंकिंग रोड़ मुंबई दीवाली पर ग्राहकों की भरमार से जूझते नजर आते हैं। दीवाली के इस जज्बे को मन में साकार रख अँधेरे को हटाने के लिए मात्र दीए न जलायें बल्कि जो अँधेरे में हैं उन्हें उजाले में ले आयें।

स्टर्नहैगन के नये शो रूम का शुभारंभ

उदयपुर। लग्जरी बाथरूम ब्रांड स्टर्नहैगन के नये शोरूम का शुभारंभ शनिवार को साइफन चौराहा पर

स्टर्नहैगेन के प्रबंध निदेशक चिराग पारेख द्वारा किया गया। कुल 2000 वर्गफीट के इस शोरूम में स्टर्नहैगन का डिस्प्ले 1000 वर्गफीट का है। शुभारंभ अवसर पर 150 अतिथियों एवं 50 वास्तुकारों की मौजूदगी में पांच बाथरूम सुईट की लांचिंग भी की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डिजाइनर डेविड रोबेक एवं लेवेंटे फिग्नार थे। इवेंट को होस्ट जानी-मानी एंकर करिश्मा कोटेक ने किया।

इस मौके पर चिराग पारेख ने कहा कि स्टर्नहेगन का कलात्मक बाथरूम सुईट कलेक्शन बहुत ही खास एवं विशिष्ट मेटेरियल, खास शैली में बना है और इसे उपभोक्ताओं के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है। स्टर्नहैगन की ओर से पहली बार गोल्ड, सिल्वर फिनिश बेसिन लांच किया गया है जो एक झलक में ही सबको लुभाने वाला है। इसके अलावा मॉड्यूलर बाथरूम वेनिटी भी लांच की है।

बहुत ही चित्ताकर्षक टाइलों से लेकर कलात्मक सेनेट्रीवेयर्स, सेंसर से चलने वाले शावर व मैचिंग एक्ससेरीज, त्रि-विमीय (थ्री डाइमेंशनल) नल व त्रि-विमीय टाइल्स। हर उत्पाद जीवन में कलात्मकता व नयेपन के अनुभव के रंग भरता है। पुरस्कार प्राप्त सुईट्स प्रकृति के विभिन्न तत्वों से प्रेरित हैं जिन्हें तकनीक और सूक्ष्म मानवीय व इंजीनियरिंग की अंतरदृष्टि से पुनः साकार किया गया है।

पेंट सुईट शहरीकरण के सुमधुर, संवेदी अनुष्ठान के समान है। जो पंचकोणीय (पेंटागन) व षट्कोणीय (हेग्जागोन) आकृतियों में मोहित करता है। ड्यूने सुईट का संग्रह पानी व हवा की शक्तियों की सहजता का संगम है। इसे देख ऐसा लगता है मानो समुद्रतल या फिर बहता हुआ रेत का रेगिस्तान साक्षात साकार हो गया हो। तारांकित क्रिस्टल सुईट वस्तुतः प्रकृति की विशिष्टता की झलक व उसी का अक्स दिखाता है।

अंधकार के बीज मत बोओ

-राजकुमार जैन 'राजन'-

ज्योति पर्व पर
जला रहे हो पीड़ा के दीप
लील चुका है तम
परंपरा, संस्कृति और संस्कार।
ज्योति-पर्व के अस्तित्व बोध में
अंधेरे से लड़ना चाहते हो
तो आओ
जला लो अपने भीतर की मशालें
संजो लो अंतर्मन में
अस्तित्व बोध का दीप।
मन में जब जलती हैं मशालें
तब खुद-ब-खुद बदलने लगती हैं
इतिहास की इबारतें
कटने लगती है संवेदना की फसल
अपने अभिमान में
खण्ड-खण्ड होते आदमी हो तुम
समय के चित्र फलक पर
गलत तस्वीर मत खींचो
ज्योति पर्व पर
अंधकार के बीज मत बोओ
तुम्हारे भीतर एक सरसब्ज बाग है
उसे सींचो
जो प्रकाश मौन और म्लान हुआ है
देवदूत की तरह अंधकार को काटो।
तुम पर समूचे भविष्य की आस्था है
और जिन्दगी महज अभिमान में तार-तार
अंधेरे का घोषणा पत्र नहीं
रूप है, रस है, गंध है, उजास है
आदमी आत्मा का छंद है।

रोशनी क्यूं छल रही ?

-डॉ. ज्योतिपुंज-

जब अंधेरी रात जगमग रोशनी में जल रही है।
रोशनी क्यूं छल रही है?
दीप के मानिंद मन की भावनाएं जाग जाओ
उस अंधेरी कोठरी में दीप छोटा सा जलाओ
अब नहीं आडम्बरों का नाचता जादू चलेगा
चौंधियाती रोशनी से आंख का दामन बचाओ
अब तो उसको ही पता है, रीत कैसे पल रही है।
रोशनी क्यूं छल रही है?
जब उसे विस्मृत करोगे जो तुम्हें भरपूर देता
स्वेदकण से सींच करके ये मजा मशहूर देता
उस नियंता के गले में क्यूं अधेरा टांगते हो
जो तुम्हें पल-पल बचाके खुद खुदा का नूर देता
क्यूं उसी के टापरे पे टिमटिमाती जल रही है।
रोशनी क्यूं छल रही है?
ये दिखावे की हवाएं सांस को भी छीन लेंगी
छीन लेंगी नागिनें भी हाथ में जब बीन लेंगी
अब बहुत शुभकामनाएं छल चुकी उसको पटाके
कब कहां कैसे किसी का कौन सा ये यकीन लेंगी
गल रही पीढ़ी सदृश ये रोशनी क्यूं गल रही है।
रोशनी क्यूं छल रही है?

धर्मेश, जितेंद्र और जाकीर थाइलैंड में करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

उदयपुर। कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक आल इंडिया फाइनल्स में कैस्ट्रॉल सुपर

मैकेनिक ऑफ इंडिया का खिताब जीतने के लिए पूरे देश से चुन कर आई तीन-तीन मैकेनिकों की आठ टीमों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली। इसमें राजस्थान के धर्मेश शर्मा, जितेंद्र सैनी और जाकीर हुसैन विजेता रहे जो थाइलैंड में होने जा रही कैस्ट्रॉल एशिया पैसेफिक मैकेनिक प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। कैस्टॉल इंडिया के वाइस प्रेसिडंट मार्केटींग केदार आपटे ने कहा कि मुंबई में संपन्न हुए फाइनल्स के लिए चुने गए मैकेनिकों के कौशल एवं ज्ञान की परीक्षा हेतु अंतिम फेरी में एक प्रश्नोत्तरी तथा एक व्यावहारिक ज्ञान का चक्र शामिल किया गया था। ये प्रतियोगी देश के कोने-कोने से आए 60,000 मैकेनिकों के बीच से दो चक्रों का कड़ा मुकाबला जीत कर फाइनल्स में पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता का भारतीय संस्करण विश्व के शीर्ष लुब्रीकेंट ब्रांडों में शुमार कैस्ट्रॉल की तरफ से आरंभ किए गए एक एशियाव्यापी उपक्रम का हिस्सा था। यह उपक्रम दुपहिया वाहनों के मैकेनिकों को अपने ज्ञान एवं प्रतिभा का प्रदर्शन करने तथा उनके कौशल को धार देने के उद्देश्य से संचालित किया गया।

केदार आपटे के अनुसार कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता दुपहिया वाहनों के मैकेनिकों की रखरखाव-प्रवीणता में सुधार लाने तथा इसका परीक्षण करने हेतु रची गई है। मैकेनिकों की प्रतिभा को एक मंच प्रदान करना भी इस प्रतियोगिता का लक्ष्य रहा है। कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता में कौशल विकास तथा ज्ञान साझा करने वाले विभिन्न सत्र भी शामिल किए गए थे, जिनसे मैकेनिकों को लुब्रीकेंट के साथ-साथ ऑटोमोटिव इंडस्ट्री के हालिया ट्रेंडों व तकनीकों की बेहतर समझ पैदा करने में मदद मिलेगी और इस प्रकार वे अपने ग्राहकों को बेहतर ढंग से सेवाएं दे सकेंगे।

आइडिया की उदयपुर में 4जी सेवाएं लॉन्च

उदयपुर। आइडिया सेलुलर ने उदयपुर और जोधपुर में 4जी सेवाएं शुरू कीं। आइडिया ने राजस्थान में अपनी 4जी सेवाओं का तेजी से विस्तार किया और अब ये सेवाएं उदयपुर और जोधपुर के अलावा जयपुर, भिवाड़ी, चोमू, कोटा, भरतपुर, अजमेर, सीकर, अलवर और पुष्कर में उपलब्ध है। राजस्थान में आइडिया की 4जी सेवाएं लगभग 2100, 4जी साईट्स के मजबूत नेटवर्क के साथ 111 शहरों और 1300 गांवों में उपलब्ध हैं। आइडिया के पास राजस्थान में 81 लाख से अधिक ग्राहकों का आधार है।

राजस्थान आइडिया सेलुलर के सर्किल हेड मुकुल खन्ना ने कहा कि हमें जोधपुर और उदयपुर में आइडिया ग्राहकों के लिए विश्वस्तरीय, हाईस्पीड 4जी सेवाएं लॉन्च करने की खुशी है।

वोडाफोन प्ले और यप्प टीवी में साझेदारी

उदयपुर। वोडाफोन के वन-स्टॉप एंटरटेनमेन्ट डेस्टिनेशन वोडाफोन प्ले ने यप्प टीवी के साथ साझेदारी की है। यप्प टीवी दक्षिण-एशियाई कन्टेन्ट के लिए दुनिया का ओटीटी लीडर है जो 14 राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं में 250 से अधिक लाईव टीवी चैनल पेश करता है। वोडाफोन इण्डिया में कन्ज़्यूमर बिजनेस के एसोसिएट डायरेक्टर अवनीश खोसला ने कहा कि मोबाइल आज लोगों के लिए मनोरंजन का पसंदीदा साधन बन चुका है, उपभोक्ताओं द्वारा स्मार्टफोन पर रोज़ाना बिताया जाने वाला औसत समय टीवी से अधिक है। मोबाइल-फर्स्ट इकोनोमी की तरफ़ भारत के बढ़ते रूझानों के मद्देनज़र यह साझेदारी की गई है। इस साझेदारी के वहत वोडाफोन प्ले के सब्सक्राइबर यप्प टीवी पर उपलब्ध लाईव टीवी चैनलों और फिल्मों की व्यापक रेंज का लुत्फ़ उठा सकेंगे। यप्प टीवी के संस्थापक एवं सीईओ उदय रेड्डी ने कहा कि हमें खुशी है कि हम वोडाफोन के उपभोक्ताओं को अपनी व्यापक सेवाएं एवं मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराने जा रहे हैं। अब वोडाफोन के उपभोक्ता यप्प टीवी पर उपलब्ध लाईव टीवी, वेब-सीरीज़, फिल्मों और टीवी शो का भरपूर आनंद उठा सकेंगे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, **पंजीयन संख्या - RAJHIN/2016/72902,** Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।